४. प्रत्यय

प्रत्यय की परिभाषा

शब्दों के बाद जो अक्षर या अक्षरसमूह लगाया जाता है, उसे 'प्रत्यय' कहते हैं। 'प्रत्यय' दो शब्दों से बना है—प्रति+अय। 'प्रति' का अर्थ 'साथ में', 'पर बाद में' है और 'अय' का अर्थ 'चलनेवाला' है। अतएव, 'प्रत्यय' का अर्थ है 'शब्दों के साथ, पर बाद में चलनेवाला या लगनेवाला'। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश हैं, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते हैं। जैसे—'भला' शब्द में 'आई' प्रत्यय लगाने से 'भलाई' शब्द बनता है। यहाँ प्रत्यय 'आई' है।

प्रत्यय के भेद

मूलतः प्रत्यय के दो प्रकार हैं—**(क) कृत् (ख) तद्धित।** इनसे शब्दों की रचना होती है। कृत् और तद्धित प्रत्ययों से बने शब्दों को समझने के पहले कृत् और 'तद्धित' को समझ लेना चाहिए।

(क) कृदन्त

क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होनेवाले प्रत्ययों को 'कृत्' प्रत्यय कहते हैं और उनके मेल से बने शब्द को 'कृदन्त'। ये प्रत्यय क्रिया या धातु को नया रूप देते हैं। इनसे संज्ञा और विशेषण बनते हैं। यहाँ द्रष्टव्य यह है कि हिन्दी में क्रियाओं के अन्त का 'ना' हटा देने पर जो अंश रह जाता है, वही धातु है। जैसे—कहना की कह्, चलना की चल् धातु में ही प्रत्यय लगते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

(क) कृत्-प्रत्यय	**क्रिया**	**शब्द**
वाला	गाना	गानेवाला
हार	होना	होनहार
ऐया, वैया	रखना, खेना	रखैया, खेवैया
इया	छलना, जड़ना	छलिया, जड़िया
(ख) कृत्-प्रत्यय	**धातु**	**शब्द**
अक	कृ	कारक
अन	नी	नयन
ति	शक्	शक्ति

Scanned with OKEN Scanner

(क) कृत्-प्रत्यय	क्रिया	शब्द
तव्य	कृ	कर्तव्य
यत्	दा	देय
(ग) कृत्-प्रत्यय	धातु	विशेषण
क्त	भू	भूत
क्त	मद्	मत्त
क्त (न)	खिद्	खिन्न
क्त (ण)	जृ	जीर्ण
मान	विद्	विद्यमान

ऊपर दिये गये उदाहरणों से स्पष्ट है कि क्रिया अथवा धातु के अन्त में कृत् प्रत्यय लगाकर कृदन्त बनाये जाते हैं। बने हुए नये शब्द संज्ञा और विशेषण दोनों हो सकते हैं।

कृदन्त के भेद

हिन्दी में **रूप के अनुसार** 'कृदन्त' के दो भेद हैं—(१) **विकारी**, (२) **अविकारी** या **अव्यय**। विकारी कृदन्तों का प्रयोग प्रायः संज्ञा या विशेषण के सदृश होता है और कृदन्त अव्यय का प्रयोग क्रियाविशेषण या कभी-कभी सम्बन्धसूचक के समान होता है। विकारी कृदन्त के चार भेद हैं—(१) **क्रियार्थक संज्ञा**, (२) **कर्तृवाचक संज्ञा**, (३) **वर्तमानकालिक कृदन्त**, (४) **भूतकालिक कृदन्त**।

हिन्दी क्रियापदों के अन्त में कृत्-प्रत्ययों के योग से (१) **कर्तृवाचक**, (२) **कर्मवाचक**, (३) **करणवाचक** और (४) **भाववाचक** संज्ञाएँ बनती हैं। इनके साथ ही कर्तृवाचक और क्रियाद्योतक—दो प्रकार के विशेषण भी बनते हैं। आगे संस्कृत और हिन्दी के कृत्-प्रत्ययों के उदाहरण दिये जाते हैं।

संस्कृत के कृत्-प्रत्यय और संज्ञाएँ

कृत्-प्रत्यय	धातु	भाववाचक संज्ञाएँ
अ	कम्	काम
अना	विद्	वेदना
अना	वन्द्	वन्दना
आ	इष्	इच्छा
आ	पूज्	पूजा
ञ् (ङि)	यज्	यज्ञ
ति	शक्	शक्ति
या	मृग्	मृगया
तृ	भुज्	भोक्तृ (भोक्ता)
उ	तन्	तनु
,,	बन्ध्	बन्धु
उक	भिक्ष्	भिक्षुक
ई	त्यज्	त्यागी
कृत्-प्रत्यय	**धातु**	**कर्तृवाचक संज्ञाएँ**
अक	गै	गायक
अ	सृप्	सर्प

Scanned with OKEN Scanner

(क) कृत्-प्रत्यय	धातु	कर्तृवाचक संज्ञाएँ
अ	दिव्	देव
तृ	दा	दातृ (दाता)
कृत्-प्रत्यय	**धातु**	**कर्मवाचक संज्ञाएँ**
य	कृ	कृत्य
अ	प्र+हृ	प्रहार

संस्कृत के कृत्-प्रत्यय और विशेषण

कृत्-प्रत्यय	धातु	विशेषण	
क्त	भू	भूत	भूतकालिक कृदन्त-विशेषण
क्त	मद्	मत्त	
न (क्त)	खिद्	खिन्न	
ण (क्त)	जृ	जीर्ण	
मान	सेव्	सेव्यमान	वर्त्तमानकालिक कृदन्त-विशेषण
तव्य	कृ	कर्तव्य	भविष्यत्कालिक कृदन्त-विशेषण
,,	वच्	वक्तव्य	
अनीय	दृश्	दर्शनीय	
,,	श्रु	श्रवणीय	
,,	पूज्	पूजनीय	

हिन्दी के कृत्-प्रत्यय

हिन्दी के कृत् या कृदन्त प्रत्यय इस प्रकार हैं—अ, अन्त, अक्कड़, आ, आई, आड़ी, आलू, आऊ, अंकू, आक, आका, आकू, आन, आनी, आप, आपा, आव, आवट, आवना, आवा, आस, आहट, इयल, ई, इया, ऊ, एरा, ऐया, ऐत, ओड़ा, ओड़, औता, औती, औना, औनी, औटी, आवनी, औवल, क, का, की, गी, त, ता, ती, न्ती, न, ना, नी, वन, वाँ, वाला, वैया, सार, हारा, हार, हा इत्यादि। हिन्दी के कृत्-प्रत्ययों से भाववाचक, करणवाचक, कर्तृवाचक संज्ञाएँ और विशेषण बनते हैं। इनके उदाहरण, प्रत्यय-चिह्नों के साथ आगे दिये जाते हैं।

भाववाचक कृदन्तीय संज्ञाएँ

भाववाचक कृदन्त-संज्ञाओं की रचना धातु के मूल के अन्त में अ, अन्त, आ, आई, आन, आप, आपा, आव, आवा, आस, आवना, आवनी, आवट, आहट, ई, औता, औती, औवल, औनी, क, की, गी, त, ती, न्ती, न, नी इत्यादि प्रत्ययों को जोड़ने से होती है। उदाहरणार्थ—

प्रत्यय	धातु	भाववाचक संज्ञाएँ
अ	भर	भार
अन्त	भिड़	भिड़न्त
आ	फेर	फेरा
आई	लड़	लड़ाई

Scanned with OKEN Scanner

प्रत्यय	धातु	भाववाचक संज्ञाएँ
आन	उठ	उठान
आप	मिल	मिलाप
आपा	पूज	पुजापा
आव	खिंच	खिंचाव
आवा	भूल	भुलावा
आस	निकस	निकास
आवना	पा	पावना
आवनी	पा	पावनी
आवट	सज	सजावट
आहट	चिल्ल	चिल्लाहट
ई	बोल	बोली
औता	समझ	समझौता
औती	मान	मनौती
औवल	भूल	भुलौवल
औनी	पीस	पिसौनी
क	बैठ	बैठक
की	बैठ	बैठकी
गी	देन	देनगी
त	खप	खपत
ती	चढ़	चढ़ती
न्ती	कूट	कुटन्ती
न	दे	देन
नी	चाट	चटनी

करणवाचक संज्ञाएँ

करणवाचक कृदन्तीय संज्ञाएँ बनाने के लिए धातु के अन्त में आ, आनी, ई, ऊ, औटी, न, ना, नी इत्यादि प्रत्यय लगते हैं। उदाहरणार्थ—

प्रत्यय	धातु	करणवाचक संज्ञाएँ
आ	झूल	झूला
आनी	मथ	मथानी
ई	रेत	रेती
ऊ	झाड़	झाड़ू
औटी	कस	कसौटी
न	बेल	बेलन
ना	बेल	बेलना
नी	बेल	बेलनी

कर्तृवाचक कृदन्त-विशेषण

कर्तृवाचक कृदन्त-विशेषण बनाने के लिए धातु के अन्त में अंकू, आऊ, आक, आका, आड़ी, आलू, इया, इयल, एरा, ऐत, ओड़, ओड़ा, आकू, अक्कड़, वन, वाला, वैया, सार, हार, हारा इत्यादि प्रत्यय लगाये जाते हैं। उदाहरणार्थ—

Scanned with OKEN Scanner

प्रत्यय	धातु	विशेषण
अंकू	उड़	उड़ंकू
आऊ	टिक	टिकाऊ
आक	तैर	तैराक
आका	लड़	लड़का
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
आलू	झगड़	झगड़ालू
इया	बढ़	बढ़िया
इयल	अड़	अड़ियल
इयल	मर	मरियल
ऐत	लड़	लड़ैत
ऐया	बच	बचैया
ओड़	हँस	हँसोड़
ओड़ा	भाग	भगोड़ा
अक्कड़	पी	पिअक्कड़
वन	सुहा	सुहावन
वाला	पढ़	पढ़नेवाला
वैया	गा	गवैया
सार	मिल	मिलनसार
हार	रख	राखनहार
हारा	रो	रोवनहारा

क्रियाद्योतक विशेषण

क्रियाद्योतक कृदन्त-विशेषण बनाने में आ, ता आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। 'आ' भूतकाल का और 'ता' वर्तमानकाल का प्रत्यय हैं। अतः, क्रियाद्योतक कृदन्त-विशेषण के दो भेद हैं—(१)**वर्तमानकालिक क्रियाद्योतक कृदन्त-विशेषण,** और (२) **भूतकालिक क्रियाद्योतक कृदन्त-विशेषण**। इनके उदाहरण इस प्रकार हैं—

वर्तमानकालिक विशेषण—	**प्रत्यय**	**धातु**	**वर्तमानकालिक विशेषण**
	ता	बह	बहता
	ता	मर	मरता
	ता	गा	गाता
भूतकालिक विशेषण—	**प्रत्यय**	**धातु**	**भूतकालिक विशेषण**
	आ	पढ़	पढ़ा
	आ	धो	धोया
	आ	गा	गाया

(ख) तद्धित

संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगनेवाले प्रत्यय को 'तद्धित' कहा जाता है और उनके मेल से बने शब्द को 'तद्धितान्त'। जैसे—

मानव+ता=मानवता　　अच्छा+आई=अच्छाई
अपना+पन=अपनापन　　एक+ता=एकता

कृत-प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में लगता है, जबकि तद्धित प्रत्यय संज्ञा,

Scanned with OKEN Scanner

सर्वनाम और विशेषण के अन्त में। तद्धित और कृत्-प्रत्यय में यही मूल अन्तर है। उपसर्ग की तरह तद्धित-प्रत्यय भी तीन स्रोतों—संस्कृत, हिन्दी और उर्दू—से आकर हिन्दी शब्दों की रचना में सहायक हुए हैं। नीचे इनके उदाहरण दिये जाते हैं।

संस्कृत के तद्धित-प्रत्यय

संस्कृत की तत्सम संज्ञाओं के अन्त में तद्धित-प्रत्यय लगाने से भाववाचक, अपत्यावाचक (नामवाचक) और गुणवाचक विशेषण बनते हैं।

संस्कृत के तद्धित-प्रत्ययों से बने जो शब्द हिन्दी में विशेषतया प्रचलित हैं, उनके आधार पर संस्कृत के ये तद्धित-प्रत्यय हैं—अ, अक, आयन, इक, इत, इन, इम, इमा, इय, इल, इष्ठ, ई, ईन, ईय, उल, एय, क, चित, ठ, तन, तः, त्य, त्र, ता, त्व, था, दा, धा, निष्ठ, म, मान्, मय, मी, य, र, ल, लु, वान, वत्, वी, व्य, श, शः, सात् इत्यादि। शब्दांश भी तद्धित-प्रत्ययों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। ये शब्दांश समास के पद हैं; जैसे—अतीत, अनुरूप, अनुसार, अर्थ, अर्थी, आतुर, आकुल, आढ्य, जन्य, शाली, हीन इत्यादि । अर्थ के अनुसार इन प्रत्ययों के प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार हैं—

प्रत्यय	संज्ञा-विशेषण	तद्धितान्त	वाचक
अ	कुरु	कौरव	अपत्य
अ	शिव	शैव	सम्बन्ध
अ	निशा	नैश	गुण, सम्बन्ध
अ	मुनि	मौन	भाव
अक	शिक्षा	शिक्षक	कर्तृ
आयन	काती (जुलाहागिरी)	कात्यायन	कर्तृ
आयन	राम	रामायण	स्थान, संज्ञा,
आयन	बदर	बादरायण	अपत्य
इक	तर्क	तार्किक	जाननेवाला, कर्तृ
इक	वर्ष	वार्षिक	गुण
इत	पुष्प	पुष्पित	गुण
इम	अग्र	अग्रिम	गुण
इमा	रक्त	रक्तिमा	भाव
इय	क्षत्र	क्षत्रिय	गुण
इल	तुन्द	तुन्दिल	गुण
इष्ठ	गुरु	गरिष्ठ	गुण
ई	पक्ष	पक्षी	गुण
ईन	कुल	कुलीन	गुण
ईय	पाणिनि	पाणिनीय	सम्बन्ध
उल	मातृ	मातुल	सम्बन्ध
एय	कुन्ती	कौन्तेय	अपत्य
एय	पुरुष	पौरुषेय	गुण, सम्बन्ध
क	बाल	बालक	ऊन
क	दर्श	दर्शक	समाहार
चित्	कदा	कदाचित्	अनिश्चय
ठ	कर्म	कर्मठ	कर्तृ

Scanned with OKEN Scanner

प्रत्यय	संज्ञा-विशेषण	तद्धितान्त	वाचक
तन	अद्य	अद्यतन	काल-सम्बन्ध
तः	अंश	अंशतः	रीति
ता	लघु	लघुता	भाव
ता	जन	जनता	समाहार
त्य	पश्चा	पाश्चात्य	सम्बन्ध
त्र	अन्य	अन्यत्र	स्थान
त्व	गुरु	गुरुत्व	भाव
था	अन्य	अन्यथा	रीति
दा	सर्व	सर्वदा	काल
धा	शत	शतधा	प्रकार
निष्ठ	कर्म	कर्मनिष्ठ	कर्तृ, सम्बन्ध
म	मध्य	मध्यम	गुण
मान्	बुद्धि	बुद्धिमान्	गुण
मय	काष्ठ	काष्ठमय	विकार
मय	जल	जलमय	व्याप्ति
मी	वाक्	वाग्मी	कर्तृ
य	मधुर	माधुर्य	भाव
य	दिति	दैत्य	अपत्य
य	ग्राम	ग्राम्य	सम्बन्ध
र	मधु	मधुर	गुण
ल	वत्स	वत्सल	गुण
लु	निद्रा	निद्रालु	गुण, कर्तृ
वान्	धन	धनवान्	गुण
वत्	यत्	यावत्	अनिश्चय
वी	माया	मायावी	गुण, कर्तृ
व्य	भ्रातृ	भ्रातृव्य	सम्बन्ध
श	रोम	रोमश	गुण
श	कर्क	कर्कश	स्वभाव, गुण
शः	क्रम	क्रमशः	रीति
सात्	भस्म	भस्मसात्	विकार
सात्	आत्म	आत्मसात्	सम्बन्ध

अब इन प्रत्ययों द्वारा विभिन्न वाचक संज्ञाओं और विशेषणों से विभिन्न वाचक संज्ञाओं और विशेषणों के निर्माण के प्रकार देखें—

जातिवाचक से भाववाचक संज्ञाएँ—संस्कृत की तत्सम जातिवाचक संज्ञाओं के अन्त में तद्धित प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। इसके उदाहरण इस प्रकार हैं—

तद्धित प्रत्यय	संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
ता	शत्रु	शत्रुता
ता	वीर	वीरता
त्व	गुरु	गुरुत्व
त्व	मनुष्य	मनुष्यत्व

Scanned with OKEN Scanner

तद्धित प्रत्यय	संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
अ	मुनि	मौन
य	पण्डित	पाण्डित्य
इमा	रक्त	रक्तिमा

व्यक्तिवाचक से अपत्यवाचक संज्ञाएँ—अपत्यवाचक संज्ञाएँ किसी नाम के अन्त में तद्धित-प्रत्यय जोड़ने से बनती हैं। अपत्यवाचक संज्ञाओं के कुछ उदाहरण ये हैं—

तद्धित-प्रत्यय	व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ	अपत्यवाचक संज्ञाएँ
अ	वसुदेव	वासुदेव
अ	मनु	मानव
अ	कुरु	कौरव
अ	पृथा	पार्थ
अ	पाण्डु	पाण्डव
य	दिति	दैत्य
आयन	बदर	बादरायण
एय	राधा	राधेय
एय	कुन्ती	कौन्तेय

विशेषण से भाववाचक संज्ञाएँ—विशेषण के अन्त में संस्कृत के निम्नलिखित तद्धित-प्रत्ययों के मेल से निम्नलिखित भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं—

तद्धित-प्रत्यय	विशेषण	भाववाचक संज्ञाएँ
ता	बुद्धिमान्	बुद्धिमत्ता
ता	मूर्ख	मूर्खता
ता	शिष्ट	शिष्टता
इमा	रक्त	रक्तिमा
इमा	शुक्ल	शुक्लिमा
त्व	वीर	वीरत्व
त्व	लघु	लघुत्व
अ	गुरु	गौरव
अ	लघु	लाघव

संज्ञा से विशेषण—संज्ञाओं के अन्त में संस्कृत के गुण, भाव या सम्बन्ध के वाचक तद्धित-प्रत्ययों को जोड़कर विशेषण भी बनते हैं। उदाहरणार्थ—

प्रत्यय	संज्ञा	विशेषण
अ	निशा	नैश
य	तालु	तालव्य
य	ग्राम	ग्राम्य
इक	मुख	मौखिक
इक	लोक	लौकिक
मय	आनन्द	आनन्दमय
मय	दया	दयामय
इत	आनन्द	आनन्दित
इत	फल	फलित

Scanned with OKEN Scanner

प्रत्यय	संज्ञा	विशेषण
इष्ठ	बल	बलिष्ठ
निष्ठ	कर्म	कर्मनिष्ठ
र	मुख	मुखर
र	मधु	मधुर
इम	रक्त	रक्तिम
ईन	कुल	कुलीन
ईन	ग्राम	ग्रामीण
ल	मांस	मांसल
वी	मेधा	मेधावी
इल	तन्द्रा	तन्द्रिल
ईय	राष्ट्र	राष्ट्रीय
उल	पृथु	पृथुल
लु	तन्द्रा	तन्द्रालु
वान्	धन	धनवान्

हिन्दी के तद्धित-प्रत्यय

ऊपर संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ तद्धित-प्रत्यय लगाकर संज्ञा और विशेषण बनाये गये हैं। अब हम हिन्दी के तद्भव शब्दों के अन्त में तद्धित-प्रत्यय लगाकर संज्ञा और विशेषण **बनायेंगे**। हिन्दी के तद्धित-प्रत्यय ये हैं—आ, आयँध, आई, ताई, आऊ, आका, आटा, आन, आना, आनी, आयत, आर, आरी, आरा, आड़ी, आल, इयल, आलू, आवट, आस, आसा, आहट, इन, इया, ई, ईला, उआ,, ऊ, ए, एर, एरा, एड़ी, एली, एल, ऐत, ऐल, एला, ऐला, ओं, ओट, ओटा, औटा, औटी, औड़ा, औड़ी, औती, औता, ओला, क, की, जा, टा, टी, ड़ा, ड़ी, त, ता, ती, नी, पन, पा, री, ला, ली, ल, वंत, वाल, वाला, वाँ, वा, स, सरा, सा, सों, हर, हरा, हा, हारा, हला, हाल इत्यादि। तद्धित-प्रत्ययान्त शब्दों के अनेक रूप हैं। इन रूपों में (१) **भाववाचक**, (२) **ऊनवाचक**, (३) **कर्तृवाचक**, (४) **सम्बन्धवाचक** और (५) **विशेषण** प्रमुख हैं। इनके उदाहरण इस प्रकार हैं—

भाववाचक तद्धितान्त संज्ञाएँ

भाववाचक तद्धित-प्रत्यय हैं—आ, आयँध, आई, आन, आयत, आरा, आवट आस, आहट, ई, एरा, औती, त, ती, पन, पा, स इत्यादि। जैसे—

प्रत्यय	संज्ञा-विशेषण	भाववाचक संज्ञाएँ
आ	चूर	चूरा
आई	चतुर	चतुराई
आन,आई	चौड़ा	चौड़ान, चौड़ाई
आयत, पन	अपना	अपनायत, अपनापन
आयँध	सड़ा	सड़ायँध
आरा	छूट	छुटकारा
आवट	आम	अमावट
आस	मीठा	मिठास

Scanned with OKEN Scanner

प्रत्यय	संज्ञा-विशेषण	भाववाचक संज्ञाएँ
आहट	कड़वा	कड़वाहट
ई	खेत	खेती
एरा	अन्ध	अँधेरा
औती	बाप	बपौती
त	रंग	रंगत
ती	कम	कमती
पन	काला	कालापन
पन	लड़का	लड़कपन
पा	बूढ़ा	बुढ़ापा
स	घाम	घमस

ऊनवाचक तद्धितान्त संज्ञाएँ

ऊनवाचक संज्ञाओं से वस्तु की लघुता, प्रियता, हीनता, इत्यादि के भाव व्यक्त हो हैं।

ऊनवाचक तद्धित-प्रत्यय हैं—आ, इया, ई, ओला, क, की, टा, टी, ड़ा, ड़ी री, ली, वा, सा इत्यादि। प्रत्ययों के साथ उदाहरण इस प्रकार हैं—

प्रत्यय	संज्ञा-विशेषण	ऊनवाचक संज्ञाएँ
आ	ठाकुर	ठकुरा
इया	खाट	खटिया
ई	ढोलक	ढोलकी
ओला	साँप	सँपोला
क	ढोल	ढोलक
की	कन	कनकी
टा	चोर	चोट्टा
टी	बहू	बहूटी
ड़ा	बाछा	बछड़ा
ड़ी	टाँग	टँगड़ी
री	कोठा	कोठरी
ली	टीका	टिकली
वा	बच्चा	बचवा
सा	मरा	मरा-सा

सम्बन्धवाचक तद्धितान्त संज्ञाएँ

सम्बन्धवाचक तद्धित-प्रत्यय हैं—आल, हाल, ए, एरा, एल, औती, जा इत्यादि। संज्ञा के अन्त में इन प्रत्ययों को लगाकर सम्बन्धवाचक संज्ञाएँ **बनायी** जाती हैं। जैसे—

प्रत्यय	संज्ञा	सम्बन्धवाचक संज्ञाएँ
आल	ससुर	ससुराल
हाल	नाना	ननिहाल
औती	बाप	बपौती
जा	भाई (भातृ)	भतीजा
ए	लेखा	लेखे

Scanned with OKEN Scanner

प्रत्यय	संज्ञा	सम्बन्धवाचक संज्ञाएँ
एरा	मामा	ममेरा
एल	नाक	नकेल

कर्तृवाचक तद्धितान्त संज्ञाएँ

संज्ञा के अन्त में आर, इया, ई, एरा, हारा, इत्यादि तद्धित-प्रत्यय लगाकर कर्तृवाचक तद्धितान्त संज्ञाएँ बनायी जाती हैं। जैसे—

प्रत्यय	संज्ञा	कर्तृवाचक संज्ञाएँ
आर	सोना	सुनार
आर	लोहा	लुहार
इया	आढ़त	अढ़तिया
ई	तमोल (ताम्बूल)	तमोली
ई	तेल	तेली
हारा	लकड़ी	लकड़हारा
एरा	साँप	सँपेरा
एरा	काँसा	कसेरा

तद्धितीय विशेषण

संज्ञा के अन्त में आ, आना, आर, आल, ई, ईला, उआ, ऊ, एरा, एड़ी, ऐल, ओं, वाला, वी, वाँ, वंत, हर, हरा, हला, हा इत्यादि तद्धित-प्रत्यय लगाकर विशेषण बनते हैं। उदाहरण निम्नलिखित हैं—

प्रत्यय	संज्ञा	विशेषण
आ	भूख	भूखा
आना	हिन्दू	हिन्दुआना
आर	दूध	दुधार
आल	दया	दयाल
ई	देहात	देहाती
ईला	रंग	रँगीला
उआ	गेरु	गेरुआ
ऊ	गरज	गरजू
ऊ	बाजार	बाजारू
एरा	चाचा	चचेरा
एरा	मामा	ममेरा
एड़ी	भाँग	भँगेड़ी
ऐल	खपरा	खपरैल
वाला	मेरठ	मेरठवाला
वी	लखनऊ	लखनवी
वन्त	धन	धनवन्त
हा	भूत	भुतहा
हर	छूत	छुतहर
हरा	सोना	सुनहरा
हला	रूपा	रुपहला

Scanned with OKEN Scanner

उर्दू के कृत् और तद्धित-प्रत्यय

बहुतेरे उर्दू शब्द भी हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। ये शब्द अरबी, फारसी और कुछ तुर्की के है। इनके कृत्-तद्धित-प्रत्यय भी इन्हीं भाषाओं के हैं।

कृदन्त

फारसी कृत्-प्रत्यय हैं—अ, आ, आन (आँ), इन्दा, इश, ई, इत्यादि। **अरबी** के सभी शब्द, संस्कृत के समान किसी-न-किसी धातु से बनते हैं। धातुएँ तीन, चार, पाँच वर्णों तक की होती हैं। धातुओं के वर्णों के मान (वजन) के अक्षर 'मूलाक्षर' हैं और वे सभी कृदन्त-रूपों में पाए जाते हैं। इन मूलाक्षरों के अलावा, कृदन्त-रूपों में धातु में कुछ और अक्षर जोड़ दिये जाते हैं, जिन्हें अधिकाक्षर कहा जाता है। ये अधिकाक्षर सात हैं—अ, त, स, म, न, ऊ, य। अधिकाक्षरों को याद रखने का सूत्र है—अतसमनूय। ये अधिकाक्षर ही **अरबी के कृत्-प्रत्यय** हैं। ये अधिकाक्षर धातु में आगे, पीछे, बीच में या मात्रा के रूप में—कहीं भी लग सकते हैं। इन प्रत्ययों के आधार पर **अरबी** के **(१) कृदन्त-विशेषण, (२) कृदन्त क्रियार्थक संज्ञा, (३) कृदन्त क्रियार्थक विशेषण, (४) कृदन्त स्थानवाचक** और **कालवाचक संज्ञाएँ** बनती हैं। **फारसी** कृदन्त-प्रत्ययों से **(१) भाववाचक, (२) कर्तृवाचक, (३) वर्तमानकालिक कृदन्त** और **(४) भूतकालिक कृदन्त**-शब्द बनते हैं।

अरबी कृदन्त-विशेषण

धातु	प्रत्यय	कृदन्तरूप	प्रकार
अलम (जानना)	फाइल	आलिम (विद्वान्)	कर्तृवाचक संज्ञा
रहम (दया करना)	फईल	रहीम (दयालु)	अधिकताबोधक
कबीर (बड़ा होना)	अफअल	अकबर (बहुत बड़ा)	अधिकताबोधक

अरबी कृत् क्रियार्थक संज्ञा

धातु	प्रत्यय	कृदन्तरूप
कबल (सामने होना)	मुफाअलत	मुकाबला
नकर (न जानना)	इफ्आल	इनकार
अरज (आगे रखना)	इफ्तिआल	एतराज

अरबी कृदन्त क्रियार्थक विशेषणों के अन्य रूप

कर्तृवाचक प्रत्यय	धातु	कर्तृवाचक	कर्मवाचक प्रत्यय	कर्मवाचक
मुफइल	नफस	मुन्सिफ (न्यायाधीश)	मुफ्अल	मुनसफ (न्याय पानेवाला)
मुन्फइल	सरम	मुन्सरिम (शासक)	मुन्फअल	मुन्सरम (शासित)
मुत्फाइल	वतर	मुत्वातिर (लगातार)	मुत्फाअल	मुत्वातर (निर्विघ्न)
मुस्तफइल	कबल	मुस्तक्बिल (भविष्य)	मुस्तफ्अल	मुस्तकबल (चित्र)

Scanned with OKEN Scanner

अरबी कृदन्त स्थानवाचक-कालवाचक संज्ञाएँ

धातु	प्रत्यय	संज्ञारूप
कतब (लिखना)	मफअल	मकतब (जहाँ लिखना सिखाया जाय)
जलस (बैठना)	सफ्इल	मजलिस
सजद (पूजा करना)	मफ्इल	मस्जिद

'प्रत्यय' का संस्कृत और हिन्दी में अर्थ है 'कोई शब्दांश या अक्षर, जो किसी संज्ञा या धातु के अन्त में जुड़कर कोई पद बनाती हो'। किन्तु साधारणतया 'प्रत्यय' का शब्दार्थ है 'चिह्न', 'पहचान' या 'प्रतीति'। अरबी के ये 'प्रत्यय' शब्द पर किसी मात्रा या अक्षर का अतिरिक्त 'भार' या 'वजन' देने के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। अतः, ये प्रत्यय 'प्रतीति' के अर्थ में शब्दों पर एक विशेषण 'वजन' पैदा करते हैं। उपर्युक्त प्रत्ययों या वजनों के अलावा भी अन्य कृदन्त प्रत्यय हैं जो आगे दिये गये हैं।

अरबी के मूल कृत्-प्रत्यय

प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण
फअ्ल	कत्ल	फिआल	कियाम (ठहरना)
फिअ्ल	इल्म	फुआल	सुवाल (पूछना)
फुअ्ल	हुक्म	फऊल	जहूर (रूप)
फिअ्लत	खिदमत	फआलत	बगावत

ये सारे, कृत्-प्रत्यय अधिकाक्षर या वजन ही हैं और ये वजन 'अतसमनूय' सूत्र वर्णों के अन्तर्गत हैं।

फारसी कृत्-प्रत्यय

प्रत्यय	धातु	कृदन्त-शब्द	वाचक
अ	आमद	आमद (अवाई)	भाववाचक
अ	खरीद	खरीद (क्रय)	भाववाचक
ई	आमदन (आना)	आमदनी	भाववाचक
आ	रिह (छूटना)	रिहा	कर्तृवाचक
इन्दा	जी (जीना)	जिन्दा	कर्तृवाचक
इन्दा	बाश (रहना)	बाशिन्दा	कर्तृवाचक
आँ (आन)	चस्प (चिपकाना)	चस्पाँ (चिपका हुआ)	वर्तमानकालिक

फारसी तद्धित-प्रत्यय के तीन प्रकार होते हैं—(१) संज्ञात्मक, (२) विशेषणात्मक और (३) वे कृदन्त पद जो संज्ञाओं में तद्धित-प्रत्यय के समान जुड़ते हैं।

संज्ञात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय हैं—(१) भाववाचक—आ, आना (आनह), ई, नामा, गी; (२) **कर्तृवाचक**—कार, गर, गार, वान; (३) **ऊनतावाचक**—क, चा, अथवा ईचा; (४) **स्थितिवाचक**—दान, आ (ह), आब।

विशेषणात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय हैं—आना, इन्दा, आवर, नाक, ई, ईन, मंद, वार, वर, ईना, जादा (जादह) गीन इत्यादि।

संज्ञाओं से तद्धित-प्रत्यय के समान जुटनेवाले फारसी कृदन्त-पद हैं—(१) कर्तृवाचक—अंदाज, दार, साज; (२) **स्थितिवाचक**—आवेज, माल; (३) **संज्ञावाचक**—

कुन, खोर, गीर, दान, दार, नुमा, नवीस, नशीन, बंद, बीर, बर, बाज, पोश, साज, सार; (४) स्थानवाचक—आबाद, खाना, गाह, इस्तान, शन, जार, बार, इत्यादि।

संज्ञात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय

प्रत्यय	मूलशब्द	सप्रत्यय शब्द	वाचक
आ	सफेद	सफेदा	भाववाचक
आ	खराब	खराबा	,,
ई	खुश	खुशी	,,
नामा	इकरार	इकरारनामा	,,
गी	मर्दाना	मर्दानगी	,,
कार	काश्त	काश्तकार	कर्तृवाचक
कार	पेश	पेशकार	,,
गार	खिदमत	खिदमतगार	,,
गार	मदद	मददगार	,,
बान	मेज	मेजबान	,,
ईचा	बाग	बगीचा	स्थितिवाचक
दान	कलम	कलमदान	,,
आब	गुल	गुलाब	,,
आब	गिल (मिट्टी)	गिलाब (कीचड़)	,,

विशेषणात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय

प्रत्यय	मूलशब्द	सप्रत्यय शब्द	प्रत्ययार्थ
आना (आनह)	मर्द	मर्दाना	स्वभाव
आना (आनह)	जन	जनाना	स्वभाव
इन्दा	शर्म	शर्मिन्दा	संज्ञा
इन्दा	कार	कारिन्दा	संज्ञा
नाक	दर्द	दर्दनाक	गुण
ई	ईरान	ईरानी	विशेषण
ई	आसमान	आसमानी	विशेषण
ईन	शौक	शौकीन	स्वभाव
मन्द	अक्ल	अक्लमन्द	स्वभाव
वार	उम्मीद	उम्मीदवार	स्वभाव
ईना	कम	कमीना	ऊनार्थ
ईना	माह	महीना	संज्ञा
जादा (जादह)	हराम	हरामजादा	अपत्य
जादा (जादह)	शाह	शाहजादा	अपत्य
गीन	गम	गमगीन	स्वभाव

तद्धित-प्रत्ययों जैसे फारसी कृदन्त-पद

प्रत्यय	मूलशब्द	सप्रत्यय शब्द	वाचक
अन्दाज	तीर	तीरन्दाज	कर्तृ
दार	दूकान	दूकानदार	

प्रत्यय	मूलशब्द	सप्रत्यय शब्द	वाचक
साज	घड़ी	घड़ीसाज	कर्तृ
आवेज	दस्त	दस्तावेज	स्थिति
खोर	हराम	हरामखोर	विशेषण
गीर	राह	राहगीर	,,
दार	फौज	फौजदार	,,
नुमा	कुतुब	कुतुबनुमा	विशेषण
नशीन	परदा	परदानशीन	,,
बर	पैगाम	पैगामबर	संज्ञा
बाज	नशा	नशेबाज	विशेषण
सार	खाक	खाकसार	,,
आबाद	अहमद	अहमदाबाद	स्थान
गाह	ईद	ईदगाह	,,
इस्तान	तुर्क	तुर्किस्तान	,,
जार	अबा (भोजन)	बाजार	,,
बार	दर	दरबार	,,

फारसी के उपर्युक्त तद्धित-पद प्रत्ययों द्वारा न बनकर कृदन्त-पदों के लिये हुए सामासिक रूप हैं। अतः ये समस्तपद हैं, तद्धितान्त नहीं। किन्तु, इनका तद्धितान्त के समान प्रयोग होता है, अतः यहाँ इनकी भी गणना कर दी गयी है।

अरबी तद्धित-प्रत्यय हैं—आनी, इयत, ई, ची, म। 'आनी' से विशेषणवाचक, 'इयत' से भाववाचक और 'ई' के गुणवाचक तद्धितान्त बनते हैं। 'ची' तुर्की व्यापारवाचक तद्धित प्रत्यय है, जिसे अरबी ने भी अपना लिया है। 'म' तुर्की स्त्रीलिंग प्रत्यय है, जो अरबी में भी ज्यों-का-त्यों व्यवहृत होता है। उदाहरण—

अरबी तद्धित-प्रत्यय

प्रत्यय	मूलशब्द	सप्रत्यय शब्द	वाचक
आनी	जिस्म	जिस्मानी	विशेषण
आनी	रूह	रूहानी	विशेषण
इयत	कैफ (कैसे)	कैफियत	भाव
इयत	इंसान	इंसानियत	भाव
ची	बाबर (विश्वास)	बाबरची	व्यापार
म	बेग	बेगम ('बेग' जाति की स्त्री)	स्त्री

Scanned with OKEN Scanner